प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के नागरिकता मूल्यों एवं सांस्कृतिक भागीदारी पर कला समेकित क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा की पी०एच०डी० (शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा
2021

निर्देशिका
डॉ. सोना दीक्षित
एम०ए०, एम०एड०, पी.एच०डी० (शिक्षा विभाग)
डिपार्टमेन्ट ऑफ फाउन्डेशन ऑफ एजुकेशन

शोधार्थिनी
रिंकी सतसंगी

डिपार्टमेन्ट ऑफ फाउन्डेशन ऑफ एजुकेशन, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा-282010

2021

1.0.0 प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रियों के अनुसार कला उन सभी क्रियाओं को कहते हैं जिनमें कौशल अपेक्षित होता हैं युरोपीय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्व दिया हैं कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है, जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है।

कला व्यक्ति के मन में स्वार्थ, परिवार, क्षेत्र, धर्म, भाशा और जाति आदि की सीमाएं मिटाकर विस्तृत और व्यापकता प्रदान करती है। व्यक्ति के मन को उदार बनाती है व व्यक्ति को ”स्व“ से निकाल कर ”वसुधैव कुटुम्बकम्“ से जोड़ती है। कला ही है जिसमें मानव में संवेदनाएं उभारने, प्रवृतियों को ढालने, चिन्तन को मोड़नें तथा अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौन्दर्य, प्रवाह, उल्लास जैसे न जाने कितने तत्वों से यह परिपूर्ण है, जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है।

मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरण की प्रवृत्ति रखता है, यही उसकी आत्म अभिव्यंजना है। चित्रकार अपनी रंगों से भरी तूलिका से जिन भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है, तो दर्शक स्तब्ध रह जाता है। पाषाण युग से जो चित्र हमें प्राप्त हुए हैं वह मात्र एक विधा नहीं है अपितु यह मानवता के विकास का एक निश्चित क्रम प्रस्तुत करते हें गुफाओं में चित्रित चित्रों के माध्यम से आखेट के चित्र मानव के संवेगों को ही प्रस्तुत नही करते अपितु उस समय के रहस्यमय प्रवृत्ति को भी प्रस्तुत करते हैं। और अपने अस्तितव के लिए किए गये संघर्ष को भी अभिव्यक्त कतरे हैं।

मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में ”व्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला है। (साकेत, पंचम सर्ग) दूसरे शब्दों में मन के अन्तःकरण की सुन्दर प्रस्तुति ही कला है।”

कला शब्द का प्रयोग सबसे पहले भरतमुनी के ‘नाट्यशास्त्र’ में ही मिलता है। वात्स्यायन ने अपने ग्रन्थ ”कामसूत्र“ में इसका वर्णन किया है।

रविन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार- “कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है।”

प्लेटों के अनुसार- “कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।”

समस्त जगत में सृष्टिकर्ता ने मानव ही ऐसा प्राणी निर्मित किया है जो अपनी बहुमुखी प्रतिभा के द्वारा ज्ञानार्जन, शोध, चिन्तन, मनन और विश्लेषण के द्वारा निरन्तर विकासोन्मुख है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव ऐसे मूल्यों की खोज करता रहता है, जो उसे पूर्णता की ओर अग्रसर करते हैं। मूल्य मानव के विचार एवं व्यवहार को निर्देशित तथा नियंत्रित करके सत्य मार्ग पर चलने की अभिप्रेरणा देते हैं। मूल्य यह निश्चित करते हैं कि क्या अच्छा है, कला में क्या सुन्दर है, सामाजिक व्यवस्था में क्या उचित हैं आधुनिक काल में नागरिकता की अवधारणा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समता की अवधारणाओं और सामाजिक कल्याण तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता से जुड़ी हुई है।

सामाजिक मूल्य, लोकप्रियता एवं कुशलता प्राप्त करने के लिए किसी भी सामाजिक व्यक्ति को सहाता प्रदान करते हैं। सामाजिक मूल्य पूर्वजों द्वारा स्थापित की गई परम्पराओं तथा मान्यताओं के प्रतिरूप होते हैं। सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत सामाजिक दायित्वों, नागरिक कर्त्तव्यों के प्रति उत्तरदायित्व, लोकतान्त्रिक निर्णय में सहमति, सर्वहितकारी कार्य अपनाने के लिये तत्परता, समाजवाद व विश्वबन्धुत्व की भावना, शिष्टाचार, भ्रातृत्व, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने की सर्वदा अनिन्दा, आदर, चिन्ता, सहयोग, करूणा, निष्कपटता, आत्म सम्मान तथा स्वः कौशल आदि सामाजिक क्रियाओं का समावेश होता है। सामाजिक मूल्य की पूर्णता वाला व्यक्ति दूसरां के प्रति प्रेम, दयालुता, सहानुाति प्रदर्शित करता है।

किसी भी व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अहम् योगदान रहता है, कयोंकि इन्हीं के आधार पर अच्छा-बुरा या सही-गलत की परख की जाती है। परिवार, समाज और विद्यालय के अनुरूप ही एक व्यक्ति में समाजिक गुणों और नागरिक मूल्यों का विकास होता है। प्राचीन काल के भारत में पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा के साथ मूल्य आधारित शिक्षा जरूरी होती थी, लेकिन वक्त के साथ वह कम होती गई और आज वैश्वीकरण के इस युग में मूल्य आधारित शिक्षा की भागीदारी लगातार घटती जा रही है। इस कारण आज विद्यालय में मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान की जाने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास हो।

संस्कृति शब्द सेम+कृ+ति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी तरह से निर्मित किया हुआ एवं अच्छे से संस्कारित किया हुआ। संस्कृति विचार, भावना, प्रथाओं, संस्कारों और ज्ञान का एक ऐसा समंयवित रूप है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होता है।संस्कृति संस्कारों से जुड़ी हुई है। यह किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित हो सकती है। अतः संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है, यह प्रकृति से मानव को मिला व्यवहार नहीं है। लापीयर के अनुसार- ”संस्कृति पीढ़ी से प्राप्त किसी सामाजिक समूह की शिक्षा है। जो रीति-रिवाजों, परम्पराओं आदि में अभिव्यक्त होती है। “ संस्कृति किसी भी देश समाज की पहचान है। संस्कृति के आधार पर ही किसी राष्ट्र की गरिमा नापी जा सकती है। इसमें जीवन मूल्य, धर्म, दर्शन, कला, शिक्षा, साहित्य, आचार-विचार, आस्था, विश्वास सभी कुछ सम्मलित हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी कला का अपना विशेष महत्व है। सभ्यता व सांस्कृतियों के वाहक के रूप में कला की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

संस्कृति वह विधि का प्रतीक हैजिसके आधार पर हम सोचते और कार्य करते हैं इसमें वे अमूर्त/अभौतिक भाव और विचार भी सम्मिलित है जो इमें एक परिवार और समाज के सदस्य होने के नाते उत्तराधिकार मं प्राप्त होते हैं। कला, संगीत, वस्तुविज्ञान, साहत्य, शिल्पकला,दर्शन, धर्म और विज्ञान सभी संस्कृति के प्रकट पक्ष है। भारत अपने गानों, रंगमंच, संगीत, लोक परम्पराओं, प्रदर्शन, कला, संस्कार, अनुष्ठान, चित्रकला और लेख के लिए पूरे विश्व में अमूर्त संस्कृतिक विरासत के रूप में जाना जाता है।

वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली छात्र केन्द्रित है। अधिगम प्रक्रिया में छात्र अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करता है एवं वह समस्या का समाधान अपनी क्षमता, योग्यता, रूचि के आधार पर शिक्षक के मार्ग दर्शन में सामाजिक वातावरण के अन्तर्गत करता है। शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह शिक्षण प्रक्रिया में कला समेकित क्रियाओं का प्रयोग करे ताकि छात्र अधिगम प्रक्रियाओं से अधिक से अधिक अभिप्रेरित हो सके।

शिक्षण क्रिया के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। शिक्षण के उद्देश्य और छात्र के पूर्वज्ञान को दृष्टि में रखते हुए शिक्षण कि विधियों, प्रविधियों अथवा व्यूहों की रचना की जाती है। नॉमन (1984) के अनुसार वह क्रिया-कलाप जो अधिगमकर्ता को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उचित

अवसर उपलबधकराती है जिसमें वह सहभागी बन सके, छात्र व स्थायी प्रवभा डालती है। कक्षागत क्रिया- कलाप से तात्पर्य ऐसे क्रिया-कलापों से है जिसके अन्तर्गत छात्र व अध्यापकों के मध्य अन्तःक्रिया होती है जो छात्र व अध्यापकों के व्यवहार परिमार्जन में सहायक होती है जिससे सीखने के लिए उत्तम वातावरण का निर्माण होता है।

अनुदेशन एक कक्षा शिक्षण में चलने वाली प्रक्रिया है जिसे व्यवस्थित रूप से कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। शिक्षक कक्षा कक्ष में अनुदेशन के माध्यम से छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन भी ला सकता है, जिससे उनके मन व व्यवहार में रचनात्मक, आत्म अभिव्यक्ति, नैतिक मूल्य व सामाजिक मूल्यों का भी विकास किया जा सके। शोधों में पाया गया है कि कलात्मक अनुभव सृजनात्मक शक्ति को बढ़ावा देते हैं,और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन बनाने में सहायक होते है वूड्स, पमेला (2011) यंग, विलियम (2011)।

1.2.0 समस्या का प्रदुर्भाव

कला के दृष्टिकोण से भारतीय चित्रकला का प्रमुख स्थान है। कला, कलाकार के मन के भावों का एक मूर्त रूप है। कला एवं कलाकार दोनों ही एक दूसरे के पूरक है। सौन्दर्य के लिए मानव सदैव पिपासु रहा है तथा कलाएँ सौन्दर्य का स्रोत रही है। भारतीय कला अत्यन्त समृद्ध हैं कलाकार परम्परा का उचित ज्ञान प्राप्त कर अपनी दृष्टि अनुभव, उद्योग, चिन्तन, मनन एवं रचनात्मक अभ्यास के बल पर अपने चित्रण में सृजनात्मकता का विकास एवमं नवीनता लाता है।

भारतीय ज्ञान कोष विस्तृत एवं व्यापक है। जहाँ एक ओर विज्ञान एवं तकनीकि इसको मजबूती और प्रगति की ओर अग्रसर कर रही है, वहीं दूसरी ओर कला विषय को शिक्षा के अन्तर्गत महत्वपूर्ण मान्यता प्राप्त है। कला शिक्षण एक ऐसी शिक्षण क्रिया है जो छात्रों में रचनात्मक व आत्मविकास को बढ़ावा देता है।

शिक्षा एक और व्यक्तित्व के ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक पक्ष का संतुलित विकास करती है वहीं दूसरी ओर व्यक्ति को समाज के लिए उपयोगी भी बनाती है। प्रत्येक शेक्षिक संरचना समाज की आवश्यकताओं तथा बालक की वृद्धि विकास को देखते हुए बनाई जाती है। प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर शिक्षा के

कुछ लक्ष्य निर्धारित होते हैं, इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम में गणित, विज्ञान व अन्य साहित्यिक विषय छात्र के बौद्धिक पक्ष का विकास करने हेतु सम्मिलित किये गये हैं विविध कौशलों की शिक्षा क्रियात्मक पक्ष व ललित कलायें छात्र के संवेगात्मक पक्ष को विकसित करती है। ललित कला में कला एक ऐसा विषय है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में व्यक्ति के तीनों पक्षों के विकास में योगदान देती है।

शिक्षा द्वारा मूल्य विकास के क्षेत्र में किए गये कुछ अनुसंधान इस प्रकार हैं-

गुप्ता (2001) के द्वारा “भारतीय शिक्षित जन मानस में विविध जीवन मूल्यों के सापेक्ष महत्व” का अध्ययन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में ज्ञात हुआ कि सम्पर्क समूह के द्वारा आत्मस्वीकृत मूल्य विरताक्रम के विश्लेषण में वर्तमान एवं भावी शिक्षकों के मध्य पनप रही स्थिति की झलक मिलती है इसमें नैतिकता और बौद्धिकता सर्वोपरि है। सामाजिक व भावात्मक, व्यवहारिकता तथा अध्यात्मिकता को मध्य स्थान प्रदान किया गया। भौतिकता तथा राजनैतिकता अंतिम सोपान पर रहे। जबकि कलात्मकता तथा सांस्कृतिक उससे कुछ उच्च स्थान पर भारतीय शिक्षित जन मानस में विद्यमान है।

गुप्ता (2003) के द्वारा ”दो विधियों से निर्धारित जीवन मूल्य के तारतम्य की अनुरूपता और शैक्षिक निहितार्थ का अध्ययन “ नामक शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि आत्मस्वीकृत तथा परीक्षण आस्था तारतम्य के परिणामों से भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार अपेक्षित है। भारतीयों में नैतिक जीवन मूल्यों का स्थान सर्वोपरि है, यह आत्मस्वीकृत वरीयता तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षण द्वारा पूर्णतः स्पष्ट हुआ।

गुप्ता (2007) द्वारा अपने अध्ययन ”उच्च शिक्षण संस्थाओं की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन “ में 450 उच्च शिक्षण संस्थाओं में स्नातमक, परास्नातमक, बी.एड. आदि में अध्ययनरत छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। यह पूर्ण रूपेण स्पष्ट हुआ कि परम्परागत भारतीय मूल्यों, धार्मिक, सौन्दर्यात्मक तथा ज्ञानात्मक मूलयों की अपनी पुरानी प्रतिष्ठा आधुनिक समय में प्राप्त नहीं हो सकी। एक अन्य अध्ययन में डुल एवं सुमन (2007) ”वैल्यूज ऑफ द स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू जेंडर एण्ड सोशियों इकोनोमिक स्टेटस “के निष्कर्ष में ज्ञात हुआ कि छात्रों द्वारा शक्ति सामर्थ्य को उच्चतम तथा पारिवारिक मान

सम्मान मूल्यों को न्यूनतम स्थान प्रदान किया गया, जबकि छात्राओं ने आर्थिक मूल्यों को प्रमुखता दी। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों के शक्ति मूल्य उच्च तथा धार्मिक मूल्य निम्न पाये गये, जबकि छात्राओं के सौन्दर्यात्मक मूल्य उच्च तथा सुखवादी मूल्य निम्न थे। निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के ज्ञानात्मक मूल्य उच्च एवं धार्मिक तथा पारिवारिक मानसम्मान सम्बन्धी मूल्य निम्न पाये गये।

शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया में दो घटक अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं- शिक्षक एवं छात्र। शिक्षक, विभिन्न विधियों से पाठ्यवस्तु का विस्तारण करता है, छात्र उसे अधिगम अनुभव के रूप में ग्रहण करते हैं। शोधार्थीनी ने कलात्मक अनुभवों के प्रभावों से संबंधित कुछ अध्ययनों का अध्ययन किया जो निम्नवत्त है-

वूड्स, पमेला (2011) ”द लरनिंग कनेक्शन्स डिराइव्ड फ्रॉम ए क्रिएटिव आर्टिस्टिक एक्सपीरियंस। “ ने प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत आर्ट के विद्यार्थियों के विद्यालय अनुाव का अध्ययन किया। परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि कलात्मक अनुभव सृजनात्मक शक्ति को विकसित करते हैं तथा अधिगम में सहायक होते हैं।

यंग, विलियम (2011) ने अपने अध्ययन ”द इफेक्ट्स ऑफ आर्ट इंटग्रेशन प्रोफेशनल डेबलपमेंट ऑन टीचिंग। “अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि शिक्षा के व्यवसायिक विकास कार्यक्रम में कला का एकीकरण किया जाना चाहिए जिससे वे कक्षा में विद्यार्थियों से सम्बन्ध बना सके तथा सम्प्रेषण कर सके । इस अध्ययन से यह सिद्ध हुआ कि कला एकीकृत व्यवसायिक विकास शिक्षा सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायक हो सकती है तथा विद्यार्थियों के प्रभावपूर्ण विधि से अधिगम आवश्यकताओं को समझा जा सकता है।

ओल्दकौस्कि (2011) द्वारा अध्ययन ”मल्टी मॉडल इन्स्ट्रक्शन एज ए मीन्स टू स्कैफोल्ड लिटरेरी इंटप्रेटेशन इन ए सेकेण्डरी इंग्लिश लैग्विज आर्ट क्लासरूम “के परिणाम में पाया गया कि विभिन्नीकृत निद्रेशन से शिक्षण व्यूह रचनाऐं विकसित की जा सकती है जो कि भाव अनुभूति के शिक्षण में अमूल्य योगदान देती है।

ब्रोलेटे (2010) ने अपने अध्ययन जिसका उद्देश्य यह जानना था कि किस प्रकार कला क्रियाएँ सामाजिक संवेगिक विकास करती है के परिणामें से पाया कि कला एकीकृत क्रियाएँ शैक्षिक उपलब्धि एवंम् स्वस्थ सामाजिक सम्बेगात्मक विकास करती है।

होलजर (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि कला कियाएँ प्राथमिक स्तर पर सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है।

बाइन्डर एवम् कोट्सपाउलो (2010) के अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि कला क्रियाओं द्वारा बच्चे स्वयम तथा अपने जीवन के महत्व को समझने में सक्षम हो जाते हैं।

एम.ब्राउन एण्ड स्टीव वी. ओवेन (1997) ने अपने अध्ययन नामक 'यूजिंग आर्ट पोसेस टू एन्हेन्स एकेडेमिक सेल्फ रेगुलेशन' के अन्तः पाया गया कि कक्षा में कला आधारित क्रियाओं के अंतरगत नाट्क के प्रयोग के बच्चों मेंसम्प्रेशन, अभ्व्यिक्ति तथा गहरी मानवता एवं मूल्य विकास होता है। निष्कर्ष में पाया गया कि कला समेकित क्रियाऐं स्वचलित व्यवहार को जन्म देती है तथा बच्चों को सामाजिक जीवन में व्यवहारिक बनाती है।

जूडिथ एवं. बर्टन, रॉवर्ट होरीविज (2002) ने अपने अध्यन 'लर्निग इन एण्ड थ्रूर दा आर्ट में पाया गया कि जिन बच्चों ने कला समृद्ध स्कूलों में अध्ययन किया वह बच्चे अधिक सृजनशील थे तथा सामाजिक कार्य में बढ़ चढ़ कर भाग लेते हैं।

जेम्स सी. कोटेराल (1998) द्वारा 'इंवाल्वमेंट इन द आर्ट एण्ड सक्सेस इन सेकेण्डरी' नामक अध्ययन में पच्चीस हजार छात्रों पर अध्ययन किया गया। निष्कर्ष रूप में प्राप्त हुआ कि कला आधारित क्रियाओं में सम्मिलित होने वाले छात्र वार्षिक परीक्षा में अधिक अंक लाते है तथा सामाजिक सेवा में संलग्नक होते हैं।

शर्ली ब्रिस हीथ (1998) द्वारा अध्ययन 'लर्निंग इन द आर्ट थ्रू लैंग्वेज एवं लर्निंग ए रिपोर्ट ऑन कम्युनटि बेस्ड यूथ ऑर्गेनाइजेशन' का निष्कर्ष था कि क्रिया अधिगम अनुाव चिंतन के तरिकों व भाषा के

उपयोग एवं युवाओं की सामाजिक भागीदारी एवं नैतिक मूल्यों को सकारात्मक रूप से मूल्यों का प्रभावित रकती है।

सांस्कृतिक भागीदारी के क्षेत्र में कुछ अध्ययन :-

सांग (2018) ने अपने अध्ययन ”फ्रांस्टरिंग क्ल्चरली रेस्पोन्सिव स्कूल : स्टूडेंट आइडेटिटी डेवलपमेंट इन क्रॉस कल्चरल क्लास के अध्ययन के परिणामों में पाया कि कक्षागत शिक्षण के अन्तर्गत बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने में कला शिक्षा द्वारा रचित शैक्षणिक क्रियाकलाप अत्यंत सफल सिद्ध होते हैं। “

सिलों एवं पीटरसन (2016) द्वारा अध्ययन ‘हीयरिंग एनसेस्टर वॉडस थ्रू क्रियेटिव आर्ट-अ टूल फॉर रसवार्यनमेटल एजूकेशन और सस्टेनेविलिटी’ अध्ययन के परिणामों में पाया गया कि शिक्षा द्वारा सततीय विकास की संकल्पना के लिए स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों को महत्व दिया जाना चाहिए जिसे कला के विधि रूपों द्वारा संवार कर सततीय मूल्यों के विकास में पाठ्यक्रम का अंग बनाया जा सकता है।

कैमल, (2016) के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि कक्षागत शिक्षण के अन्तर्गत बहु संस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने में कला शिक्षा द्वारा रचित शैक्षणिक क्रियाकलापों की उपयोगिता है।

चतुर्वेदी, अर्चना (2001) के अध्ययन ”विभिन्न सांस्कृति संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्गित गुर्णों, नैतिक मूलयों और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना का अध्ययन “ में विभिन्न सांस्कृतिक समुदाय के विद्यालयों की आवश्यकताएँ भी अलग-अलग पाई गई। ये विद्यालय सांस्कृतिक, सामुदायकि और धार्मिक विविधता से युक्त पाये गये। ये विद्यालय अपनी संस्कृति और धर्म के सम्पूर्ण वातावरण पर उनकी संस्कृति की छाप होती हैजो बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों का प्रभावित करती है।

उपरोक्त अध्ययन भारतीय शिक्षा आयोग के दूरगामी लक्ष्य को परिलक्षित करते हैं जिसने कहा कि ”भारत के भाग्य का निर्माण उनकी कक्षाओं में हो रहा है। “ जब भारत के भागय का निर्माण उनकी कक्षाओं में हो रही है तो यह आवश्यक है कि हम शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे वे अपने विद्यार्थियों को ऐसा

वातावरण उपलब्ध कराये जो उनको मानसिक चिन्ताओंव भग्नाशाओं से मुक्त करने व उनमें नागरिक गुणों का विकास करने में सहायक हो।वे वर्तमान सांस्करिक परिवेश के अपनाये और अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

1.3.0 अध्ययन का औचित्य

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने व्यक्त किया है कि ”शिक्षा सूना प्रदान करने एवं कौशलों का प्रशिक्षण देने तक ही सीमित नहीं है। अपितु इसे शिक्षित व्यकित को मूल्यों का विचार भी प्रदान करना है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक है अतः जिस समुदाय में वे रहते हैं, उस समुदाय के प्रति उनका भी सामाजिक उत्तरदायित्व है “‘आर्ट फॉर बेन सेक सन् 1998 में जारी आर, सिल्वेस्टर लिखते है कि कला अनुदेशन पूरे तंत्रिकातंत्र के विकास में सहायक है। कला द्वारा अनुदेशन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक क्रियात्मक कौशल एवम् ज्ञानात्मक योग्यताओं के विकास के लिए आवश्यक है।

‘आर्ट एजुकेशन एवम् कला व मानवीकी कमेटी’ के अध्यक्ष के अनुसार कला के द्वारा एक विद्यार्थि की रचनात्मकता बढ़ती है, उसे संवेग नियन्त्रित होते हैं व उसके अन्दर समस्या समाधान का कौशल विकसित होता है। इसमें व्यक्ति उत्तम अधिगमकर्ता बनता है व यह ध्यान केन्द्रित करने में सहायक हैं सन् 2000 में हुई एक क्रान्फ्रेंस में इलीमट आइसनर ने अपने शोध पत्र कला द्वारा शिक्षण हेतु 10 लेसन (पाठ) में कला द्वारा कला के निष्कर्षों को दिया है उन्होंने कला व विज्ञान में गुणात्मक सम्बन्धों पर बल दिया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एन.सी.ई.आर.टी. में उल्लखिति रविन्द्रनाथ टैगोर के निबन्ध ‘सभ्यता और प्रगति, से की निम्न पंक्तियां कला शिक्षा की पूर्णता एवं बालक के जीवन में उसके महत्व पर पूर्ण प्रकाश डालती है-

जब में बच्चा था, तो मैं छोटी-छोटी चीजों से अपने खिलौने बनाने और कल्पना में नये-नये खेल बनाने की मूझे पूरी आजादी थी, मेरी खुशी में मेरे साथियों का पूरा हिस्सा होता था बल्कि मेरे खेलों की पूरी मजा उनके साथ् खलेने पर निर्भर रहती थी। एक दिन हमारे बचपन के इस स्वर्ग में वसस्कों की बाजार प्रधान दुनिया से एक प्रलाभन ने प्रवेश किया। एक अंग्रेजी दुकान से खरीदा गया खिलौना हमारे एक साथी को दिया

गया, वह कमाल का खिलौना था, बड़ा और मानो सजीव। हमारे साथी को उस खिलौने पर घमण्ड हो गया और अब उसका ध्यान हमारे खेलों में इतना नहीं लगता था, वह उस कीमती चीज को बहुत ध्यान से हमारी पहुंच से बहुत दूर रखता था, अपनी इस खास वस्तु पर इठ्लाता हुआ वह अपने अन्य साथियों से खुद को श्रेष्ठ समझता था, क्योंकि उनके खिलौने सस्ते थे। मैं निश्चित तोर पर कह सकता हूँ कि अगर वह इतिहास की आधुनिक भाशा का प्रयोग कर सकता तो वह यह ही कहता कि वह उस हास्यप्रद रूप से श्रेष्ठ खिलौनों का स्वामी होने की हद तक हमसे अधिक सभ्य था, अपनी उत्तेजना में वह एक चीज भूल गया वह तथ्या जो उस वक्त उसे बहुत मामूली लगा था कि इस प्रलोभन में एक ऐसी चीज खो गई जो उसके खिलौने से कहीं श्रेष्ठ थी, बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा, न ही उसके खले में बच्चे का आनन्द था और न ही उसके खेल की दुनिया में साथियों को खुला निमंत्रण।

माध्यमिक शिक्षा समिति (1952-1953) की रिर्पोट के अन्तर्गत विद्यार्थियों में सृजनात्मक ऊर्जा के विकास एवं सांस्कृतिक विकास के सम्मान एवं ज्ञान पर अधिक जोर दिया गया था, इस ज्ञान द्वारा वे आगामी जीवन में उसका प्रयोग एवं उपयोग कर जीवन यापन करने में सक्षम हो सकते हैं।

प्रो० यशपाल की अध्यक्षता में संगठित समिति की रिपोर्ट जिसका शीर्षक था 'लर्निंग विद्आउट बर्डन' अर्थात शिक्षा बिना बोझ विद्यार्थियों पर पाठ्य क्रम के बोझ को कम करने और उच्च स्तरीय शिक्षा प्रणाली की सिफारिश की गई साथ ही साथ विद्यार्थियां में स्वयं सीखने एवं कौशल विकास पर जोर दिया गया। इस समिति का मानना था कि यदि बोझिल शिक्षा प्रक्रिया होगी तो विद्यार्थी स्वानुभव, आत्म प्रदर्शन एवं रचनात्मकता को बैहतर रूप से प्रदर्शित करने में असहाय होगा।

सनृ 2013 में मिसिसिपी स्टेट यूनीवर्सिटी के अध्ययन 'मिसिसिपी आर्ट कमीशन के पूर्ण विद्यालय पहल एवम् कला एकीकरण' के अनुसार कला को अन्य विषयों के साथ समेकित करने पर कक्षा अधिगम में सुधार होता हैं सामाजिक विषयों में कला के एकीकरण के सन्दर्भ में जूली, एन टेलर, टिमोथी मोक व सना अयूव (2014) आर्ट इन्टिग्रेशन इन द सोशल स्टडीज रिसर्च एण्ड परस्पैक्टिव फोर्म द फिल्ड, काउन्सलर ए

जरनल ऑफ द सोशल स्टेटिक्स एक अध्ययन किया गा। इसके अनुसार शिक्षाविद् दृश्य कलाओं व उनके प्रत्ययों का प्रयोग विद्यार्थियों की शिक्षा में रूचि बढ़ाने अर्थपूर्ण परिचर्या व ऐतिहासिक व सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने के लिए करते हैं।

कला शिक्षण की प्रासंगिकता की समस्या केवल भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में है। सन् 2000 में यूनेस्को के डारेक्टर जनरल ने कला को स्कूली शिक्षा के लिए अनिवार्य विषय के रूप में स्थापित किये जाने के लिए प्रस्तावित किया। कला शिक्षण द्वारा सृजनात्मकता एवं सांस्कृतिक, शान्ति पूर्ण एवं सौहार्दमय वातावरणका विकास सम्भव है, उन्होंने अपने भाषण में कहा कि विज्ञान, तकनीकी, शारीरिक शिक्षा, समाजिक विज्ञान के समकक्षकला शिक्षण को भी मान्यतादी जानी चाहिए जिससे बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक विद्यार्थियों का ज्ञान एवं भावात्मक स्तर पर संतुलन स्थापित हो सकेगा। नाटक की भी शिक्षा में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी होती है, कला शिक्षण द्वारा शरीर एवं मस्तिष्क दोनों की सक्रिय भागीदारी होती है। अन्य विषयों को सीखने में भी कलात्मक गतिविधियाँ सहयोग देती है विद्यार्थी आक्रोश एवं उद्दण्डता से दूर होकर सृजनशील और ज्ञानवान व्यक्तितव का धनी हो जाता है।

कला शिक्षा विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण उपयुक्त माध्यम के रूप में पाठ्यक्रम का अभिन्न भाग है। यह शिक्षा दो तथ्यों पर आधारित है, प्रथम तथ्य है कि प्रत्येक विद्यार्थि में अनेक प्रतिभाएं छिली होती हैं, सृजनात्मकता योग्यताओं से भरपूर होती है, और दूसरी तथ्य है कि कला शिक्षा बालक की इन सृजनात्मक योग्यताओं को परिपूर्ण करने में सहायता प्रदान करती है, यह कलाएं ही विद्यार्थियें की उत्सुकता, कल्पना, सृजन, सौन्दर्यानुभूति और भावानुभूतिको विकसित करती है। विभिन्न कलाएं जेसे-चित्रकला, मूर्तिकला, सृजनात्मककता, संगीतकला, नृतयकला, थियेटर ड्रामा आदि के माध्यम से बालक को उसकी वंशानुगत क्षमताओं को प्रकट करने एवं अभिव्यकत करने का अवसर प्रदान करती है। इन्हीं से व्यकित समाज में समायोजन तथा एक उत्तरदायी नागरिक बना सकता है, इसी संकल्पना से शोधार्थिनी ने इस विषय का चयन किया है।

उपयुकत अनुसंधानों के अवलोकन से शोधार्थिनी के मस्तिक में कई प्रश्न उत्पन्न हुए जो निम्नलिखित हैं-

1. प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में नागरिकता के मूल्य किस स्तर तक विद्यमान हैं?

2. प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सांस्कृतिक भागीदारी किस स्थर तक निभाते हैं?

3. क्या दृश्य कला समेकित क्रियाओं द्वारा नागरिकता मूल्य विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं?

4. क्या दृश्यकला समेकित क्रिया द्वारा सांस्कृतिक भागीदारी बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है?

उपयुक्त प्रश्नों के उत्तर को खोजने के लिए शोधार्थिनी के मन में यह प्रश्न उठा कि क्या प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के नागरिकता मूल्यों पर कला आधारित समेकित क्रियाओं का उनके व्यवहार में मूल्यों के विकास में और सांस्कृतिक भागीदारी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा? इसी जिज्ञासा की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी ने इस शोध शीर्षक का चयन किया है और इसविषय पर अध्ययन करने का निश्चय किया है।

1.4.0 समस्या कथन

शोध हेतु चयनित समस्या का कथन इस प्रकार है-

” प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के नागरिकता मूल्यों एवं सांस्कृतिक भागीदारी पर कला समेकित क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन “

1.5.0 अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

1.5.1 मूल्य

सी.वी. गुड (1989) के शब्दों में ”जीवन मूल्य चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्यबोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है, लगभग सभी विचार मू मूल्यों के अर्थात् चरित्र को स्वीकार करते हैं। “ मूल्य शिक्षा द्वारा सहयोग, प्रेम, करूणा, शक्ति एवं अहिंसा, साहस, समांता, बधुंत्व आदि मौलिक गुणों का विकास किया जा सकता है। मूल्य शिक्षा द्वारा शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों को एक उत्तरदायी नागरिक के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकता है। देश की सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में

जागरूक किया जा सकता है। अपने साथियों के प्रति, मानवता के प्रति, धर्म और संस्कृति के प्रति, जीवन और पर्यावरण के प्रति, समुचित दृष्टिकोण का विकास मूल्यों की शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है।

वैल्युज डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन (1945) में मूल्यों को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "मूल्य एक ऐसी विशेषता है जिसे मनोवैज्ञानिक सामाजिक, नैतिक और सौन्दर्यात्मक विचारों के परिप्रेक्ष्य में उत्कृष्ट एवं महत्वपूर्ण समझा जाता है तथा ये उस व्यक्ति में अन्तर्निहित रहते हे जो उसके विश्वास के अनुसार सुरक्षा व नैतिक सहायता प्रदान करता है "।

अल्डेविन (2006) ने कहा है कि नागरिकता मूल्य पहचान तथा स्वजागरूकता से सम्बन्धित है तथा इसके तीन मुख्य आयाम है-

1. मानसिक आयाम- जिसके अन्तर्गत व्यक्ति की राष्ट्र के प्रति निष्ठा तथा समाजिक सम्बन्धों प्रति जुड़ाव आता है।
2. सांस्कृतिक आयाम- जिसमें व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक विरासत को अपनी पहचान समझता है तथा उसमें सन्तुष्टि की भावना महसूस करता है।
3. नागरिक आयाम- जिसके अन्तर्गत नागरिक के अधिकार एवम् कर्तव्य आते हैं।

कार्यात्मक परिभाशा- प्रस्तुत अध्ययन में नागरिकता मूल्य के मूल्य के मूल तत्व राजनीतिक, सहभागिता, सामाजिक एवं कल्याणकारी अधिकार, साम्प्रदायिक और नागरिक दायित्व स्वच्छता, सांस्कृतिक धरोहर के प्रति सम्मान, धार्मिक मूल्य, पारिवारिक मूल्य, आदि का अध्ययन किया जायेगा। नागरिकता मूल्यों के अन्तर्गत पाये जाने वाले निम्न व्यवहारगत परिवर्तनों का अध्ययन किया जायेगा- व्यक्तिगत दायित्व और दूसरों की सहायता करना, सामूहिक भागीदारी, राजनीति में रूचि, न्याय प्राप्ति हेतु क्रियाशीलता, समाज सुधार हेतु सत्परता, समाजिक जावाबदेही, सामुदायिक सम्बन्ध, व्यक्तिगत पहचान एवम् स्वतन्त्रता।

1.5.2 संस्कृति

ई.बी. टाइलर के अनुसार- “संस्कृति उस समुदाय का नाम हे जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नीति, विधि, रीति-रिवाज तथ अन्य ऐसी क्षमताओं और आदतों का समावेज करता है जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में मानता है। “

डॉ. हरवंश लाल शर्मा का कहना है कि ”विभिन्न शास्त्रों, दर्शन आदि में होने वाली चिंतन, साहितय, चित्रांकन आदि कलाओं एवं परिहित साधन आदि नैतिक आदर्शों तथा व्यवहारों को सांस्कृति की संज्ञा देते हैं। “

वासुदेव शरण अग्रवाल का कहना है कि ”संस्कृति मनुष्य के मूल्य वर्तमान और भावी जीवन का सम्पूर्ण प्रकाश है हमारे जीवन का ढंग हमारी संस्कृति है जीवन के नानाविध रूपों का समुदाय ही संस्कृति है। “ कौवर का कहना है कि ”संस्कृति अखंड और गतिशील है। पीढ़ी दर पीढ़ी सम्प्रेशित एवं अर्जित की जाती है। वह मानव समुदाय की धरोहर है। इसका गठन और शैली अलग होती है। “

कम्पैना एवं अन्य (2020) के अनुसार “सांस्कृतिक भागीदारी को संस्कृतिक उत्पादों, प्रक्रियाओं के निर्माण औरउपयोग मं व्यक्तियों और समूहों की गतिविधियों को निरूपित करने केलिए एक छत्र शब्द के रूप में परिभाषित किया गा है जिसमें सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप, संस्कृतिक गतिविधियों में प्रगतिशील भागीदारी भी निहित है।”

प्रक्रियात्मक परिभाषा- इस शोध में सांस्कृतिक भागीदारी को ग्रहणशील, रचनात्मक और चेतनापूर्ण गतिविधियों जिनके माध्यम से व्यक्ति अपनी अध्यात्मिक उन्नति करते हैं के रूप में परिभाषित किया गया है। जो आयामों से सम्बन्धित है जैसे-संस्कृति, विरासत, प्रदर्शन कला, पुस्तकों, प्रेस, आडियोंवीजवल, मीडिया और मल्टीमीडिया।

1.5.3 कला

विद्वानों द्वारा कला की परिभाषाएँ :-

अग्रवाल वासुदेवशरण (1952)- ”कला भावों का पृथ्वी पर अवतार है।

प्लोटो के अनुसार (1960)- ”कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।

अरस्तु के अनुसार (1972)- ”कला अनुकरण है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार (1996)- ”कला मानव की बाहय वस्तुओं की अपेक्षा स्वानुभूति की अभिव्यक्ति

ललित कला सौन्दर्य प्रधान होती है। चित्रकला सभीकलाओं में श्रेष्ठ है यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष देने वाली है मनुष्य स्वयं में भी अनुकरण की प्रवृत्ति रखता है जैसे देखता है उसी प्रकार अपने को ढालने का प्रयास करता है यह उसकी आत्माभिव्यंजना है। ब्रहमा द्वारा रचित इस सृष्टि में किसी भी देश की संस्कृति का सम्यक् ज्ञान वहाँ की ललित कलाओं से होता है। ललित कलाओं कोदो भागों में विभाजित किया गया है-

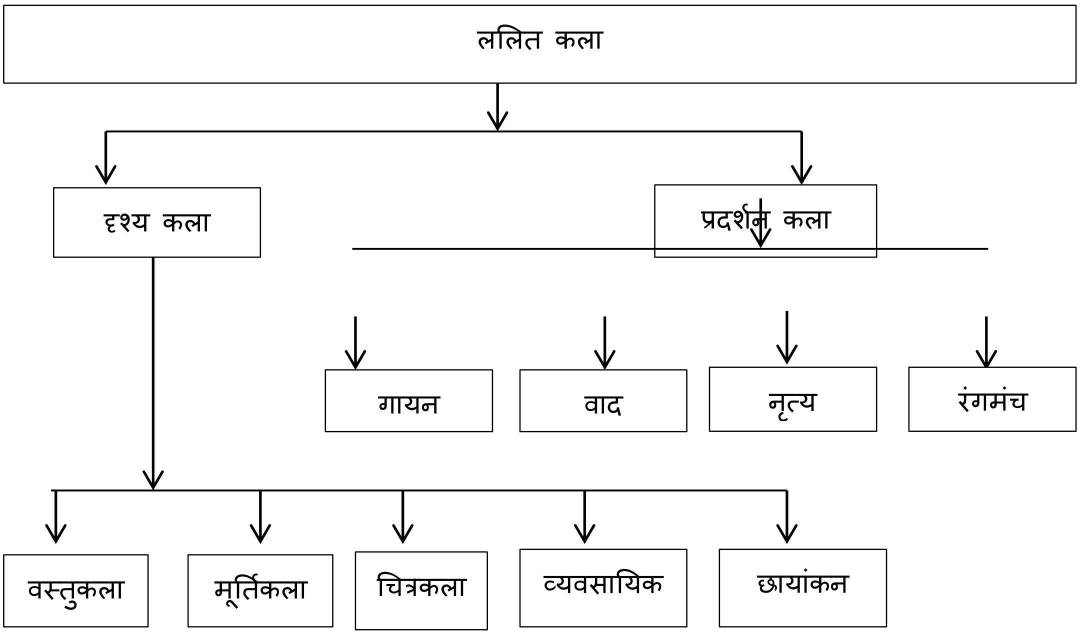

चित्र सं. 1.6.1 ललित कला का वर्गीकरण

कार्यात्मक परिभाषा- प्रस्तुत शोध में दृश्य कला में चित्रकला के अन्तर्गत पोस्टर, कोलाज,क्ले, मॉडलिंग, वॉल पैन्टिंग, म्यूरल, पोट पेन्टिंग आदि का प्रयोग किया जायेगा।

1.5.4 कला समेकित क्रियाऐं

शिक्षा में कला शैक्षिक अनुसंधान का एक विस्तृत क्षेत्र है। कला समेकित क्रिया से तात्पर्य कला के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया का संचार करना होता है तथा कला के अन्तर्गत दृश्य कला के माध्यम से की जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया कला समेकित क्रिया कहलाती है। कला समेकित क्रिया एक रचनात्मक प्रक्रिया, भावनाओं

और विचारों को व्यक्त करने व समझने के लिए एक उचित माध्यम है। कला आधारित क्रियाओं के माध्यम से कक्षागत शिक्षण को रोकच व प्रभावशाली बनाया जा सकता है और छात्रों का ध्यान केन्द्रित करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

कार्यात्मक परिभाषा- प्रस्तुत अध्ययन में कला समेकित क्रियाओं के अन्तर्गत दृश्य कला में चित्र कला पोस्टर,कोलाज, क्ले माडलिंग, भित्ती चित्रण, म्यूरल, पोट पोन्टिंग आदि के मॉड्यूल तैयार किये जायेगें। माड्यूल का स्वरूप इस प्रकार होगा-

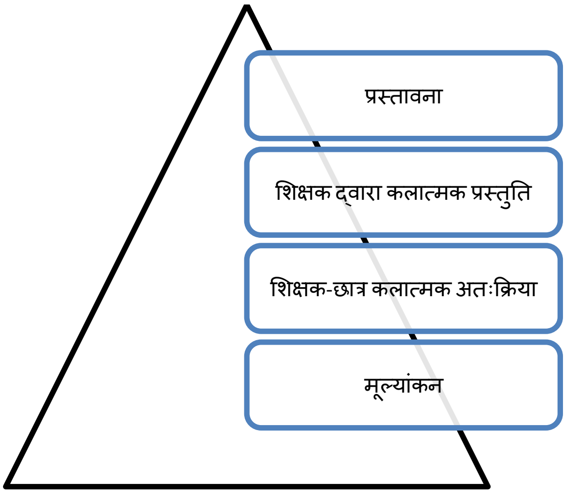

चित्र 1.7.0 मॉड्यूल का स्वरूप

प्रत्युक मॉड्यूल का समय 60 मीनट कुल मॉड्यूल 20

1. प्रस्तावना- (प्रयुक्त कला के विषय में जानकारी) जैसे- पोस्टर, कोलाज, क्ले मॉडलिंग, वित्ती, चित्रण, म्यूरल,पोट पैन्टिंग आदि के विस्तार से विवरण दिया जायेग।
2. शिक्षक द्वारा कलात्मक प्रस्तुति- (प्रदर्शन)
3. शिक्षक-छात्र कलात्मक अतःक्रिया- (छात्र स्वयं बनायेंगे) नागरिकता मूल्यों आधारित कला क्रियाओं का प्रदर्शन किया जायेगा। मूल्यों की चर्चा भी की जायेगी तथा छात्र कलात्मक कृति की अनुकृति करेंगे।
4. मूल्यांकन- छात्रों की विभिन्न कला क्रियाओं का शिक्षक द्वारा मूल्यांकन किया जायेगा।

1.6.0 अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के नागरिक मूल्यों पर कला समेकित क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।

2. प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशक्षणार्थियों की सांस्कृतिक भागीदारी पर कला समेकित क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।

1.7.0 अध्ययन की परिकल्पना

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप परिकल्पनाऐं निर्मित की गई जो इस प्रकार है-

1. प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के नागरिक मूल्यों पर कला समेकित क्रियाओं का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2. प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के समाजिक भागीदारी पर कला समेकित अधिगम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

1.8.0 अध्ययन के अन्तर्गत प्रयुक्त चर इस प्रकार हैं-

1. स्वतन्त्र चर- कला समेकित क्रियाऐं।

2. आश्रित चर- नागरिकता मूल्य सांस्कृतिक भागीदारीं

3. नियंत्रित चर- आयु/कक्षा

तालिका संख्या 1.8.1 नियंत्रित चर

चरों का वर्ग	चर	चरों को नियंत्रित करने की विधियाँ
व्यक्तिगत चर	आयु	प्रतिदर्श द्वारा
	लिंग	
	अभिप्रेरणा	सौहार्द स्थापित करके
	थकान	समान समय के द्वारा
	अभ्यास	
पर्यावरणीय चर	कक्षा कक्ष	सौहार्द स्थापित करके
	परीक्षण समय	स्थिरांक
	प्रकाश	
	परीक्षण प्रशासन	

1.9.0 समस्या का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध में दयालबाग शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत डी.एल.ऐड. के (100) छात्र व छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लिया जायेगा।

2. प्रस्तुत शोध को विषय की दृष्टि से प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में कलात्मक अधिगम क्रियाओं द्वारा नागरिकता के मूल्यों औरसांस्कृति भागीदारी के विकास तक ही सीमित रखा गया है।

3. कलात्मक अधिगम क्रियाओं में केवल दृश्य कला सम्बन्धित मॉड्यूल तेयार किये जायेंगे।

1.10.0 अनुसंधान प्रक्रिया

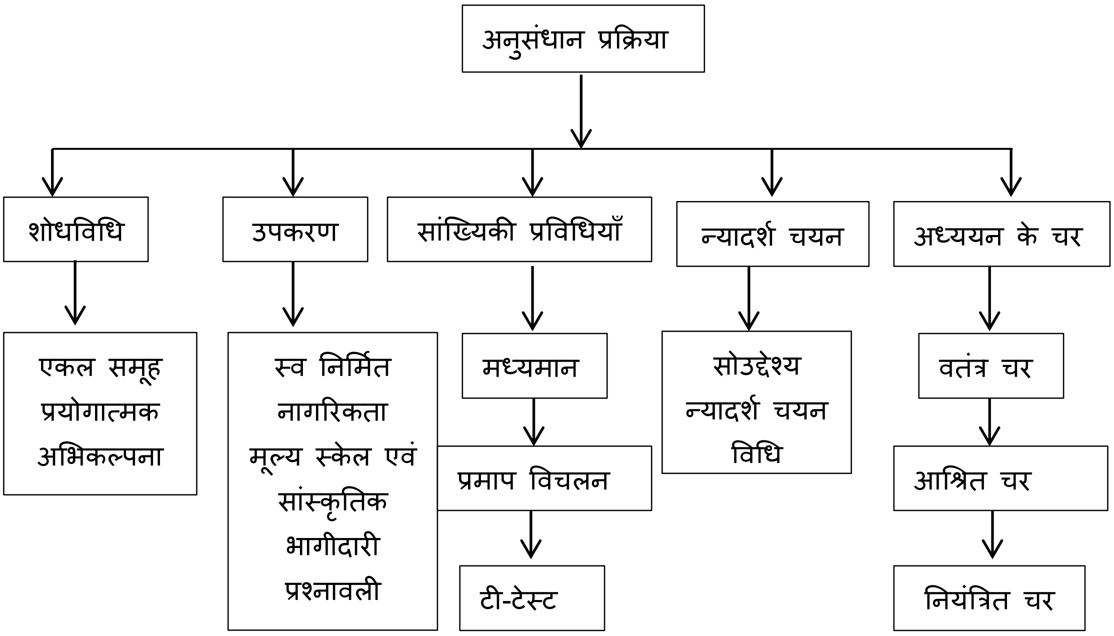

चित्र सं. 1.10.1 अनुसंधान की प्रक्रिया

1.11.0 अनुसंधान अभिकल्प- अनुसंधान के अन्तर्गत प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका सं. 1.11.1 अनुसंधान अभिकल्प

पूर्व परीक्षण नागरिकता मूल्य एवं सांस्कृतिक भागीदारी	प्रयोगात्मक समूह (N=100) कला समेकित क्रियाऐं	पश्च परीक्षण नागरिकता मूल्य व सांस्कृतिक भागीदारी

1.12.0 न्यादर्श

दयालबाग शिक्षण संस्थान मं अध्ययनरत प्राथमिक स्तर D.EL.ED शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को सोउद्देश्य न्यादर्श चयन विधि द्वारा चयनित किया जायेगा।

1.13.0 अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि को प्रयुक्त किया जायेगा।

1.14.0 सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सम्बन्धित एकत्रित प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

मध्यमान

प्रमाप विचलन

टी-टेस्ट

1.15.0 शोध उपकरण

1. दृश्य कला में चित्र कला आधारित (20) माड्यूल शोधार्थिनी द्वारा तेयार किये जायेगा।
2. नागरिकता के मूल्यों से सम्बन्धित स्वनिर्मित नागरकि मूल्य मापनी शोधार्थिनी द्वारा तैयार किये जायेगें।
3. सांस्कृतिक भागीदारी पर आधारित प्रश्नावली को शोधार्थिनी द्वारा निर्मित किया जायेगा।

1.17.0 अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ-

विद्यार्थियों हेतु उपादेयता-

शिक्षा का मुख्य कार्य बालकों का सर्वागींण विकास करना है इसके लिए बालकों में क्रियात्मक एवम् रचनात्मक कार्यों की प्रवृत्ति विकसित करता है। अतः विद्यालय में शिक्षा प्रक्रिया तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं को आयोजित कर उनके लिए उचित वातावरणका निर्माण कर उनके सृजनात्मक स्तर को ऊँचा उठाने में अपनी

महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगें। उनके सृजनात्मकता व सांनात्मक प्रोत्साहन देकर उनका बहुमुखी विकास कर सकेंगे।

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों हेतु उपादेयता-

1. प्राथमिक स्तर के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के नागरिकता मूल्य एवं सांस्कृतिक भागीदारी के स्तर को जान सकेगें।
2. कला समेकित क्रिया के मॉड्यूल द्वारा कक्षा-कक्ष के वातावरण को व्यवहारिक रूप प्रदान किया जा सकेगा।
3. विभिनन मॉड्यूल के द्वारा शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में कलात्मक अनुभव तथा सृजनात्मक शक्ति को बढ़ावा मिलेगा।
4. शोधार्थिनी द्वारा तैयार किये गये मॉड्यूल वैज्ञानिक आधार पर विकसित किये जायेंगे। इनका उपयोग विभिनन कक्षागत परिस्थितियों में किया जाना सम्भव होगा।

विद्यालय हेतु उपादेयता-

शिक्षकों को शोध के परिणामों से ज्ञात होगा कि

- विद्यार्थियों के नागरिकता के मूल्यों व सांस्कृतिक भागीदारी का विकास कक्षागत क्रिया कलापों द्वारा किया जा सकता है।
- शिक्षण विधियों के अन्तर्गत दृश्य कला का उपयोग शिक्षण कला समेकित क्रियाऐं द्वारा अधिगम को रूचिकर बनाता है तथा उचित मूलयों का विकास करता है।
- दृश्यकला विकास द्वारा जो विद्यार्थियों की प्रतिभा तथा सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

1. विद्यालय प्रबंध विद्यार्थियों के नागरिकता मूल्यों व सांस्कृतिक भागीदारी के विकास पर बल देगी।
2. प्रधानाचार्य तथा विद्यालय प्रबंधक कला समेकित क्रियाओं को पठन-पाठन का प्रमुख अंग बनाने का प्रयास करेंगे।

माता-पिता हेतु सुझाव-

1. प्रस्तुत शोध माता-पिता तथा अभिवाकों को निर्देशन प्रदान करने में सहायक होगा ताकि वे बालकों में सृजनात्मकत के विकास पर बल दें।

2. माता-पिता तथा अभिभावक अपने बालकों में नागरिकता के मूल्य, व सांस्कृतिक भागीदारी, दायित्व के निर्वाह तथा अधिकारों के प्रति सजगता के विकास हेतु प्रेरित होंगे।

शोधार्थिनी द्वारा दृष्टिगत है कि कला आधारित मॉड्यूल द्वारा तैयार की गई कलात्मक अभिव्यक्तियां तथा चित्र विश्वविद्यालय के प्रांगण को अधिक सौन्दर्य तथा सौहार्द प्रदान करने में सहायक सिद्ध होंगे। अप्रत्यक्ष रूप से वे सभी विद्यार्थियों तथा शिक्षकों में नागरिकता के मूल्य व सांस्कृतिक भागीदारी विकसित करने की भूमिका निभा सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, ऋतु, मिश्रा एम. के. (2016) शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त (प्रथम संस्करण) राखी प्रकाशन, आगरा।
- कुमार, अनिल, पी. एम. आइंशावी (2008) स्टूडेन्टस अवेयरनैस ऑफवेल्यूज इन द कॉन्टेन्ट ऑफ सेकेण्डरी लेविल इंगिलश एजुट्रेक्स- हैदराबाद, 7 (9), 30-31।
- ओल्दकौस्कि (2011) मल्टी मॉडल इन्स्ट्रक्शन एज ए मीन्स द स्कैफोल्ड लिटरेरी इंटप्रेटेशन इन ए सेकेण्डरी इंग्लिश लैग्विज आर्ट क्लासरूम, अन्तर्राष्ट्रीय लघुशोध एवस्ट्रेक्ट, 73।
- अल-डेबियन, ए, मोहम्द ए.बी. (2006) स्टडीज एण्ड रिसर्चर ऑफ द थर्ड अरब मींटिग फॉर टीचिंग एण्ड सस्टेनबल ऐजूकेशन इन द अरब वर्ड, लन्दन।
- गुप्ता, आर.पी. (2003) दो विधियों से निर्धारित जीवन मूल्य के तारतम्य की अनुरूपता और शैक्षिक निहितार्थ का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 22(2)।

- गुप्ता, आर. पी. (2007) उच्च शिक्षण संस्थाओं की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 26(2)।
- गास्टाकन, जॉन (1991) निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों के मूल्यों और विशिष्ट, उपलब्धियाँ में सम्बन्ध डिजरटेशन एब्स्ट्रेक्ट इण्टरनेशनल।
- डुल एवं सुमन (2007) वैलूज ऑफ द स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू जेन्डर एण्ड सोसियो इकोनोमिक स्टेट्स, एजुकेटस हैदराबाद 6 (12), 36-39।
- जेम्स सी.कैटरल (1998) इंवॉल्वमेनट इन द आर्ट एंड सक्सेस इन सेकेंडरी स्कूल, अमेरिकन फॉर आर्ट मोनोगाफस,वॉशिंगटन, 97
- जूडिथ.एम.बर्टन, रोबर्ट हॉरोविटेज़ एण्ड हाल एबेल्स (2000) लर्निंग एण्ड थूर द आर्टःद क्वेश्चन ऑफ ट्र्रासफर, स्टडी इन आर्ट एजुकेशन,77
- जुली एण्ड टेलर, टिमोथी मोक व सना अयूव (2014) आर्ट इन्टिग्रेशन इन द सोशल स्टडीज रिसर्च एण्ड परस्पैक्टिव फोर्म द फिल्ड, काउन्सलर ए जरनल ऑफ द सोशल स्टेटिक्स, 5 (1)।
- जैश्री (2008) मूल्य पर्यावरण और मानव अधिकार की शिक्षा, नई दिल्ली, पब्लिकेशन नई दिल्ली।
- पाण्डेय, रामशकल (1976) मूल्यों का महत्व, मूल्य शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- पाण्डेय, रामशकल एवं मिश्र, करूणा शंकर (1991) मूल्य शिक्षण ,विनोद प्रकाशन आगरा।
- सिंह, बी.आर. (2016) कला शिक्षण, विनोद प्रकाशन मन्दिर, आगरा।
- मुकले, जेम्स. (2005) एथकिल वैल्यूज इन रसियन एजूकेशन टुडेःए मोरल मैज, जनरल्स ऑफ
- एम. बॉम एण्ड स्टीवन वी.ओवेन (1997) यूजंग आर्ट प्रोसेस टू इन एन्हेन्स एकेडेमिक सेल्फ रेगुलेशन, पेपर
- एट कनेक्शन नेशनल सिबोसियम ऑन लर्निग एण्ड द आर्ट न्यू स्टेटेजीस फॉर प्रमोटिंग स्टूडेंट सक्सेस, न्यूयॉक,75

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (2009) प्रथम संस्करण, नयी दिल्ली।
- यंग, विलियम(2011) द इफैक्टस् ऑफ आर्ट इंटीग्रेशन प्रोफेशनल डवलॉपमेंट ऑफ टीचिंग, अन्तर्राष्ट्रीय लघुशोध एवस्ट्रेक्ट, 73।
- वुडस, पमिला (2011) द लरनिंग कनेक्शन्स डिराइव्ड फ्रॉम ए क्रिएटिव आर्टिस्टिक एक्सपीरियंस, अन्तर्राष्ट्रीय लघुशोध एवस्ट्रेक्ट, 73।